# पाठ-11 विश्व का स्वर्ग मॉरीशस

**मौखिक प्रश्न**

क. भारत का स्वर्ग कश्मीर को कहा जाता है।

ख. मॉरीशस को विश्व का स्वर्ग कहा गया है।

ग. मॉरीशस में जून से सितंबर तक सरदी का मौसम रहता है।

घ. रोचेस्टर फॉल्स एक जलप्रपात है।

**लिखित प्रश्न**

1. क. मार्क ट्वेन ☑ ख. ज्वालामुखी के फटने से ☑
2. क. हाँ ख. हाँ ग. नहीं घ. नहीं ङ. हाँ
3. क. लेखिका और उसके साथी जल विहार के लिए अनंत विस्तार वाले समुद्र में गए।

   ख. विदेशी सैलानी तैराकी का आनंद ले रहे थे।

   ग. गद्यांश में समुद्री यातायात के साधन मोटरबोट और नौका का वर्णन है।

   घ. समुद्र के पानी का रंग नीले-हरे रंगों का मिश्रण था।
4. क. आप्रवासी घाट मॉरीशस में एक ऐसा स्थान है, जहाँ भारत सहित कई देशों से अनेक लोग बँधुआ मज़दूर बनाकर लाए गए थे।

   ख. मॉरीशस का सबसे बड़ा त्योहार शिवरात्रि है। इस दिन मॉरीशसवासी गंगा तालाब तक नंगे पैर, पैदल चलकर आते हैं। सभी धर्मावलंबी श्रद्धा-सुमन चढ़ाते हैं।

   ग. जब परी तालाब में भारत से गंगाजल लाकर प्रवाहित किया गया, तब परी तालाब का नाम गंगा तालाब पड़ा।

   घ. मॉरीशस में सात रंगों की मिट्टी वाली भूमि को अद्भुत कहा गया है, क्योंकि यह मिट्टी लाखों वर्ष पूर्व किसी ज्वालामुखी के फटने से बनी थी। इसमें सात रंग अलग-अलग दिखाई देते हैं। वैज्ञानिक ऐसा मानते हैं कि यहाँ की मिट्टी में हीरे हो सकते हैं।

   ङ. 'मुड़िया पहाड़' का ऐसा नामकरण इसलिए हुआ, क्योंकि उसे दूर से देखने पर ऐसा प्रतीत होता है, जैसे उसके शीर्ष पर कोई आदमी बैठा हो। आदमी के सिर जैसा दिखने के कारण इसका नामकरण 'मुड़िया पहाड़' हुआ।
5. क. 'मॉरीशस देश की भूमि में आत्मा भारत की है' से आशय है—वहाँ पर विवाह-समारोहों में होने वाले रीति-रिवाज भारतीय शादी जैसे हैं। ज़्यादा-से-ज़्यादा लोग भारत के न रहते हुए भी पूरी तरह भारतीय लगते हैं। उनका पहनावा, खानपान सब भारतीयों जैसा है। वहाँ के लोगों की वाणी आत्मीयता से भावविभोर करने वाली है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि मॉरीशस देश की भूमि में आत्मा भारत की है।

   ख. कछुआ पार्क के चारों ओर ऊँची दीवार है, जहाँ अनेक विशाल कछुए अपने अंगों को समेटे निष्क्रिय पड़े रहते हैं। उन्हें देखकर किसी को भी उनके चट्टान होने का भ्रम हो सकता है। केवल देखने में ही नहीं, हाथ से छू लेने पर भी वे पत्थर ही लगते हैं।

   ग. कोरल रीफ पर्यटन के लिए अत्यंत खूबसूरत स्थान है। ये कोरल पाँच-छह हज़ार वर्ष पुराने हैं। ये इतने तेज़धार हैं कि यदि इनपर पाँव पड़ जाए, तो तुरंत कट जाए। सभी कोरल सजीव हैं। ये साँस लेते हैं और बढ़ते हैं। ये कोरल विविध आकारों के हैं, कुछ छतरीनुमा, कुछ बारहसिंघा के सींगों जैसे, कुछ मशरूम जैसे।

   घ. लेखिका ने अपनी यात्रा के दौरान सबसे पहले पोर्ट लुईस नगर और हिंद महासागर के सौंदर्य को देखा, जिसकी लहरों से निगाहें हटने का नाम नहीं ले रही थी। सूर्य की सतरंगी किरणों ने लहरों को भी सतरंगा बना दिया था। दूसरे दिन मॉरीशस का शादी समारोह देखा, जहाँ पर सभी रीति-रिवाज भारतीय शादी जैसे थे। अगले दिन लेखिका आप्रवासी घाट देखने गईं, जहाँ भारत सहित कई देशों से अनेक लोग बँधुआ मज़दूर बनाकर लाए गए थे। इसके उपरांत गंगा तालाब देखा, जहाँ





मॉरीशसवासी शिवरात्रि के दिन पूजा-अर्चना करते हैं। इसके उपरांत प्राकृतिक सौंदर्य बिखेरता रोचेस्टर फॉल्स और सात रंगों वाली अद्भुत मिट्टी देखी और फिर विशाल कछुओं से भरा कछुआ पार्क देखा, जिसके चारों ओर ऊँची दीवार है। इस पार्क में अनेक विशाल कछुए अपने अंगों को समेटे निष्क्रिय पड़े होते हैं। आदमी के सिर जैसा दिखने वाला मुड़िया पहाड़ भी देखा। इसके बाद हरियालीयुक्त बोटैनिकल गार्डन और विविध आकृति के कोरल रीफ जो पर्यटन के लिए अत्यंत खूबसूरत स्थान है। ये कोरल पाँच-छह हज़ार वर्ष पुराने हैं। ये इतने तेज़धार हैं कि यदि इन पर पाँव पड़ जाए, तो तुरंत कट जाए। लेखिका ने पहली बार समुद्र के गर्भ में अनोखे शैवालों, सुंदर मछलियों तथा जल-जंतुओं को देखा।

**6. सुनो और लिखो।**

शिक्षक शब्दों का शुद्ध उच्चारण करते हुए बोलें और छात्र ध्यानपूर्वक सुनकर शब्दों को लिखें।

**सोचो और बताओ**

मॉरीशसवासियों के पूर्वज भारत से ही मॉरीशस लाए गए थे। प्रत्येक भारतीय उन्हें अपने पूर्वजों का ही ध्यान दिलाता होगा। इसलिए, जब लेखिका विवाह समारोह में नवविवाहित जोड़े को आशीर्वाद देने गईं, तब उन्हें लगा कि मानो उनके पूर्वज ही भारत की धरती से नवविवाहित जोड़े को आशीर्वाद देने आए हैं। इसलिए, वे सभी लेखिका को देखकर प्रसन्न हो गए होंगे।

**भाषा बोध**

1. ख. शिव की रात्रि तत्पुरुष समास

   ग. भाव से विभोर तत्पुरुष समास

   घ. गंगा का जल तत्पुरुष समास
2. ग. गंगा घ. साँस ङ. अंदर च. भाँति
3. ख. i) मोटरबोट से जल विहार किया।

   iii) मोटरबोट से जल विहार किया था।

   ग. i) झील का नाम परी तालाब रखा।

   ii) झील का नाम परी तालाब रख रहे थे।
4. क. आगमन ख. आदर ग. आजन्म घ. आमरण ङ. आकर्षण च. आक्रमण
5. क. नरक ख. अंत ग. अस्वच्छ घ. सूर्योदय ङ. आसमान च. बदसूरत
6. क. शशांक ख. झील ग. दुनिया घ. हिमांशु ङ. अनल

# पाठ-12 कर्मवीर

**मौखिक प्रश्न**

क. भाग्य के भरोसे रहने वालों का जीवन दुखों से भरा होता है।

ख. आज करना है जिसे, करते उसे है आज ही।

ग. जीवन में सफलता पाने का मूलमंत्र है—भाग्य के भरोसे न रहकर अपने कार्य को निश्चित समय पर करना।

घ. लगन के साथ कर्म करते हुए दुर्भाग्य को भी सौभाग्य में बदला जा सकता है।

**लिखित प्रश्न**

1. क. भाग्यवादी को ☑ ख. अधीर ☑
2. क. नहीं ख. नहीं ग. हाँ घ. हाँ
3. क. आज-कल करते हुए कर्मवीर समय को नहीं गँवाते, इसलिए हम कह सकते हैं कि वे समय के महत्व को जानते हैं।

   ख. जीवन में समय का बहुत महत्व है, इसलिए आज का काम कल पर नहीं छोड़ना चाहिए।

   ग. यत्न करने से कभी जी भी चुराते हैं नहीं।

   घ. इस काव्यांश में 'नमूना' शब्द से अभिप्राय है—उदाहरण, आदर्श।
4. क. जो कभी बाधाओं से नहीं घबराते, उनका डटकर सामना करते हैं। जो भाग्य के भरोसे नहीं रहते। ऐसे लोग सदैव उन्नति करते हैं।

   ख. कर्मवीर कठिन-से-कठिन कार्य को करने में भी नहीं घबराते, अपने परिश्रम तथा यत्न से किसी भी कार्य को करके उसमें सफलता प्राप्त करते हैं और इस तरह वे दूसरों के लिए आदर्श स्थापित करते हैं।

   ग. कर्मवीर जो कार्य जब करना होता है, उसे उसी समय करते हैं, उस कार्य को कल पर नहीं टालते। इस तरह कर्मवीर अपने समय का सदुपयोग करते हैं।

   घ. कर्मवीर दूसरों पर इसलिए आश्रित नहीं होते, क्योंकि वे किसी कार्य को करने से घबराते नहीं और न ही किसी कष्ट या बाधा के कारण पीछे हटते हैं।
5. क. ऐसी कौन-सी बात या कार्य है जो कर्मवीर के लिए नहीं है, अर्थात वे अपनी कर्मवीरता से हर कार्य को करने में सक्षम होते हैं और इस तरह वे औरों के लिए एक नमूना अर्थात उदाहरण बन जाते हैं। कर्मवीर अपने लगन और साहस के कारण सदैव सफलता प्राप्त करके लोगों के लिए आदर्श बन जाते हैं।

   ख. भाग्य के भरोसे रहने वाले व्यक्ति को दुख भोगना पड़ता है तथा अंत में अपने कार्य के लिए पछताना पड़ता है। परंतु, कर्मवीर कभी भाग्य के भरोसे नहीं रहते। इसलिए, न उन्हें दुख भोगना पड़ता है और न ही उन्हें अपने कार्य के लिए पछताना पड़ता है।
6. क. कर्मवीर के लिए कुछ भी असंभव नहीं होता, क्योंकि वह कठिनाइयों को देखकर विचलित नहीं होते। कठिन-से-कठिन काम को भी पूरा करके ही छोड़ते हैं। वे दूसरों पर नहीं, बल्कि स्वयं की ताकत पर भरोसा रखते हैं। वे प्रत्येक कार्य को करने की सामर्थ्य रखते हैं। इस आधार पर कहा जा सकता है कि कर्मवीर के लिए कुछ भी असंभव नहीं।

   ख. ऐसे व्यक्ति कभी नाकाम नहीं होते जो भाग्य पर नहीं, कर्म पर विश्वास रखते हैं क्योंकि ऐसे व्यक्ति अपने बाहुबल से सभी बाधाओं पर सरलता से विजय प्राप्त कर लेते हैं। कठिन से कठिन कार्य भी सरलता से कर लेते हैं। वे परिश्रम से कभी जी नहीं चुराते।

   ग. कवि ने कर्मवीर की विशेषता बताते हुए कहा है कि कर्मवीर के रास्ते में कैसी भी बाधा क्यों न आ जाए, लेकिन वह घबराता नहीं है। कर्मवीर सदैव अपना काम समय पर करते हैं, उसे कल पर नहीं टालते। कर्मवीर कितना भी कठिन काम क्यों न हो, उससे घबराते नहीं और न ही उकताते हैं। वे कभी भी दूसरों का मुँह नहीं देखते और न ही भाग्य के भरोसे रहकर दुख भोगते हुए पछताते हैं। वे यत्न करने से पीछे नहीं हटते हैं, बस आगे बढ़ते जाते हैं।





घ. कविता में कवि ने कर्मवीर के गुणों का वर्णन किया है। कर्मवीर अपने कर्म के प्रति समर्पित होकर निरंतर सफलता प्राप्त करते हैं, क्योंकि वे कभी किसी बाधा या कष्ट से घबराते नहीं हैं, कोई काम कल पर नहीं टालते, किसी काम से उकताते नहीं, चाहे वह कितना ही कठिन क्यों न हो, कभी भी भाग्य के भरोसे नहीं रहते और न ही किसी काम के लिए दूसरे का मुँह देखते हैं। कवि ने बताया है कि कर्मवीर अपने गुणों से लोगों का आदर्श बन जाते हैं।

**7. सुनो और लिखो।**

शिक्षक शब्दों का शुद्ध उच्चारण करते हुए बोलें और छात्र ध्यानपूर्वक सुनकर शब्दों को लिखें।

**सोचो और बताओ**

कवि कर्म का पक्षधर है। कवि ने बताया है कि कर्मवीर भाग्य के भरोसे रहकर दुख भोगते हुए पछताते नहीं हैं, बल्कि अपने कर्म के द्वारा अपने लक्ष्य को हासिल करके सफलता प्राप्त करते हैं। कवि ने कर्म का पक्ष लेते हुए बताया है कि कर्मवीर कर्म करते हैं, वे भाग्य का भरोसा नहीं करते हैं।

**भाषा बोध**

1. क. घबराहट ख. चंचलता ग. वीरता घ. भलाई ङ. बुराई च. ऊँचाई
2. क. भाग्य, हिस्सा ख. मन, किसी के नाम के साथ लगने वाला अव्यय ग. समय, मौत
3. क. व्+इ+घ्+न्+अ

   ख. व्+इ+च्+इ+त्+अ

   ग. न्+इ+श्+च्+अ+ल्+अ

   घ. द्+उ+र्+ग्+अ+म्+अ
4. विशेषण — विशेष्य

   क. दुर्गम — पहाड़ों

   ख. घने — जंगल

   ग. ऊँची — लहर

   घ. बुरे — दिन

5. क. मुँह  ख. भाग  ग. दिन  घ. काम  ङ. पहाड़  च. आग

6. क. कल बाज़ार में बहुत भीड़ थी। स्त्रीलिंग
   ख. कल अच्छा दिन था। पुल्लिग
   ग. शेर का मुँह बहुत बड़ा था। पुल्लिग
   घ. समुद्र की लहरें तेज़ थीं। स्त्रीलिंग
   ङ. चूल्हे में आग जल रही थी। स्त्रीलिंग

**कार्यकलाप**

प्रश्न 1 से 4 विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

**ज्ञान विस्तार**

विद्यार्थी पढ़ें और जानें।

## पाठ-13 गिल्लू

**मौखिक प्रश्न**

क. कौए गिलहरी के छोटे बच्चे को अपने आहार के रूप में देख रहे थे।

ख. दोनों कौओं की चोंचों से घायल होकर गिलहरी का बच्चा गमले में निश्चेष्ट पड़ा था।

ग. लेखिका जब लिखने बैठती, तब गिल्लू को लेखिका का ध्यान आकर्षित करने की तीव्र इच्छा होती थी।

घ. वसंत आने पर गिल्लू को जाली के पास बैठकर बाहर विचरती अन्य गिलहरियों को अपनेपन से देखते हुए देखकर लेखिका ने उसे मुक्त करना आवश्यक समझा।

**लिखित प्रश्न**

1. क. काजू ☑ ख. दो वर्ष ☑

2. क. कली ख. घौंसले ग. लघुगात घ. गिल्लू

3. क. लेखिका द्वारा पाले गए जीवों में केवल गिल्लू ही ऐसा था, जो उनके साथ उनकी थाली में खाना खाता था।

   ख. गिल्लू लेखिका की थाली में बैठकर खाने का प्रयास करता।

   ग. काजू न मिलने पर गिल्लू खाने की अन्य चीज़ें या तो लेना बंद कर देता या झूले से नीचे फेंक देता था।

   घ. लेखिका ने गिल्लू को अपनी थाली के पास बिठाकर खाना सिखाने में कठिनाई का अनुभव किया।

4. क. लेखिका गिलहरी के बच्चे को बचाने के लिए उसे अपने कमरे में लाईं, फिर रुई से रक्त पोंछकर उसके घावों पर पेंसिलिन का मरहम लगाया। रुई की पतली बत्ती दूध से भिगोकर जैसे-तैसे उसके नन्हे-से मुँह में लगाकर उसे दूध पिलाने का प्रयास किया।

   ख. लेखिका ने अस्पताल से लौटने पर जब झूले की सफ़ाई की, तो उसे गिल्लू का सर्वाधिक प्रिय खाद्य पदार्थ काजू झूले में भरे मिले, इस बात से पता चलता है कि लेखिका के दुर्घटनाग्रस्त होने पर गिल्लू ने खाना-पीना कम कर दिया था।

   ग. लेखिका के अस्वस्थ होने पर गिल्लू ने लेखिका के सिरहाने बैठकर अपने नन्हे-नन्हे पंजों से उनके सिर और बालों को हौले-हौले सहलाकर एक परिचारिका की भूमिका निभाई।

   घ. गरमियों में गिल्लू का सुराही पर लेटना यह दर्शाता था कि वह गरमी से बचना चाहता था और लेखिका के समीप भी रहना चाहता था।

   ङ. गिल्लू ने अपने जीवनयात्रा के अंत में दिनभर न कुछ खाया, न बाहर गया। रात में अंत की यातना में भी वह झूले से उतरकर लेखिका के पास आ गया, और अपने ठंडे पंजों से लेखिका की उँगली पकड़कर हाथ से वैसे ही चिपक गया, जैसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था।

5. क. 'गिल्लू' पाठ के आधार पर हम कह सकते हैं कि महादेवी वर्मा का चरित्र पूरी तरह से ममतामयी और दयालु था। उनके हृदय में प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता थी, जीव-जंतुओं के प्रति दया और स्नेह का सागर विद्यमान था। उनका व्यक्तित्व मानवीय संवेदना से भरपूर था। हमने देखा कि किस तरह से वे एक घायल मरणासन्न गिलहरी के बच्चे को अपने प्यार और स्नेह से नया जीवन प्रदान करती हैं और फिर इतना लगाव होने के बावजूद उसे वसंत आने पर आज़ाद कर देती हैं, क्योंकि वे उसकी भावनाओं को समझती हैं। इसलिए, हम कह सकते हैं कि महादेवी वर्मा में दया, स्नेह, संवेदनशीलता और ममता का भंडार था।





   ख. गिल्लू सोनजुही लता की सघन हरीतिमा में छिपकर बैठता था और जब लेखिका सोनजुही में यह देखने जाती कि इस लता में कोई कली आई कि नहीं, तो वह कूदकर उनके कंधे पर बैठ जाता था, यही कारण था कि सोनजुही को देखकर लेखिका को गिल्लू का स्मरण हो आया था।

   ग. लेखिका और गिल्लू में बहुत ही गहरा आत्मीय स्नेह था। लेखिका जैसे ही बाहर से आती, तो गिल्लू भागकर लेखिका के पास वैसे ही आ जाता था, जैसे एक बच्चा अपनी माँ को देखते ही उसके पास आ जाता है। गिल्लू लेखिका के अस्पताल में भर्ती होने पर अपना प्रिय खाद्य पदार्थ काजू भी खाना छोड़ देता है, इस बात से हमें यह पता चलता है कि लेखिका की भाँति गिल्लू भी उनसे आत्मीय स्नेह रखता था।

**6. सुनो और लिखो।**

शिक्षक शब्दों का शुद्ध उच्चारण करते हुए बोलें और छात्र ध्यानपूर्वक सुनकर शब्दों को लिखें।

**सोचो और बताओ**

हाँ, प्रेम और अपनेपन से किसी को भी अपना बनाया जा सकता है, चाहे वह पशु-पक्षी हो या मनुष्य। प्रेम और अपनापन सभी समझते हैं, फिर चाहे वह पशु-पक्षी ही क्यों न हो। प्रेम की भाषा सभी को एक-दूसरे से जोड़ती है और परस्पर अपनत्व का संचार करती है, जिससे सभी एक-दूसरे के प्रति स्नेह का भाव रखते हैं। जैसे आपने देखा कि लेखिका का प्रेम और अपनापन ही था, जिसके कारण एक लघुप्राणी उनके प्रति इतनी आत्मीयता रखता है और उन्हें अपना समझता है। इसलिए, हम कह सकते हैं कि प्रेम और अपनेपन से किसी को भी अपना बनाया जा सकता है।

**भाषा बोध**

1. ख. काजू न मिलने पर वह अन्य चीज़ें या तो न लेता या उन्हें झूले से नीचे फेंक देता।

   ग. गिल्लू मर गया था, इसलिए उसका झूला उतारकर रख दिया गया।

2. क. स्निग्ध रोएँ ख. झब्बेदार पूँछ ग. चमकीली आँखें

   घ. सघन हरीतिमा ङ. हलकी डलिया च. अच्छा उपाय

3. ख. दोपहर — दो पहरों का समूह — द्विगु समास

   ग. इधर-उधर — इधर और उधर — द्वंद्व समास

   घ. लघुप्राण — लघु है जो प्राणी — कर्मधारय समास

4. क. लघुगात ख. परिचारिका ग. दुर्घटना घ. मरणासन्न

5. ख. लेखिका को देख गिल्लू अपने झूले से उतरकर भागता हुआ आता।

   ग. गिलहरियों के जीवन की आयु दो वर्ष से अधिक नहीं होती है।

   घ. गिल्लू को घायल अवस्था में छोड़ने को मन नहीं माना।

6. क. गुंजा ख. दुग्ध ग. जल घ. पुष्प